GLOBUS

Globus Journal of Progressive Education
A Refereed Research Journal
Vol 13 / No 2 / Jul-Dec 2023 P - ISSN: 2231-1335, E- ISSN: 2582-7200

भारतीय संस्कृति में एकात्म मानववाद के मूलभूत आधार

*कुमारी तुलसी गौड़
**गीता दुबे

Paper Received: 10.11.2023 / **Paper Accepted**: 30.12.2023 / **Paper Published**: 05.01.2024

Corresponding Author: कुमारी तुलसी गौड़; doi: 10.46360/globus.edu.220232013

सारांश

भारतीय संस्कृति में एकात्म मानववाद की जड़ें गहरी और व्यापक रूप से व्याप्त हैं। यह दर्शन पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित किया गया था, जो समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति और आध्यात्मिकता के समन्वय पर बल देता है। एकात्म मानववाद का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के बीच संतुलन स्थापित करना है, जिसमें भारतीय परंपराओं, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक आदर्शों का समावेश हो। यह विचारधारा पश्चिमी पूंजीवाद और साम्यवाद के चरमपंथी दृष्टिकोणों के विपरीत एक वैकल्पिक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था प्रस्तुत करती है, जिसमें आत्मनिर्भरता, समरसता और लोकहितकारी नीतियों को प्राथमिकता दी जाती है। भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणाएँ, जैसे धर्म, कर्तव्य, स्वदेशी, सहअस्तित्व और सर्वजन हिताय-सर्वजन सुखाय एकात्म मानववाद के सिद्धांतों के साथ पूर्णतः समाहित हैं। आधुनिक संदर्भ में, यह विचारधारा आत्मनिर्भर भारत, स्वदेशी जागरण, सतत विकास, और सामाजिक समरसता की नीतियों के माध्यम से प्रासंगिक बनी हुई है। यह शोध भारतीय संस्कृति और एकात्म मानववाद के पारस्परिक संबंधों की व्याख्या करते हुए यह विश्लेषण करेगा कि कैसे यह दर्शन वर्तमान सामाजिक और आर्थिक नीतियों में योगदान दे सकता है।

मूल शब्द: एकात्म मानववाद, भारतीय संस्कृति, दीनदयाल उपाध्याय, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, आत्मनिर्भरता, समग्र विकास।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति एक समावेशी, संतुलित और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध परंपरा की वाहक रही है, जिसमें व्यक्ति, समाज और प्रकृति के बीच सामंजस्य को प्राथमिकता दी गई है। इस सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में एकात्म मानववाद एक ऐसी विचारधारा के रूप में उभरता है, जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। इस सिद्धांत की आधारशिला पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने रखी, जो भारतीय जीवन मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों पर आधारित एक समग्र विकास मॉडल प्रस्तुत करता है।

एकात्म मानववाद का मूल भारतीय परंपरा के आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक मूल्यों में निहित है। यह विचारधारा पश्चिमी अर्थव्यवस्थाओं के पूंजीवाद और समाजवाद के चरमपंथी दृष्टिकोणों के स्थान पर भारतीय परंपराओं के अनुरूप एक मध्यम मार्ग अपनाने की बात करती है। इसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की परिकल्पना के साथ मानव जीवन के सभी पहलुओं को संतुलित रूप से विकसित करने पर बल दिया गया है।

1. **धर्म और नैतिकता पर आधारित शासन** – एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति के नैतिक एवं धार्मिक मूल्यों को शासन प्रणाली में समाहित करने की वकालत करता है।
2. **सामाजिक समरसता और सहअस्तित्व** – समाज के सभी वर्गों के समान विकास पर बल दिया जाता है।
3. **आर्थिक आत्मनिर्भरता और स्वदेशी जागरण** – स्थानीय उत्पादन, स्वदेशी उद्योगों और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दिया जाता है।
4. **सांस्कृतिक राष्ट्रवाद** – भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने पर बल।
5. **विकेंद्रित आर्थिक और प्रशासनिक प्रणाली** – ग्राम स्वराज और स्थानीय शासन प्रणाली को प्रोत्साहन।

आज के वैश्विकरण और तकनीकी युग में आत्मनिर्भर भारत, सतत विकास, और सामाजिक समरसता जैसी नीतियों में एकात्म मानववाद की झलक देखी जा सकती है। यह विचारधारा न केवल भारतीय समाज बल्कि संपूर्ण

* *शोधकर्त्ता, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत*।
** *शोध निर्देशक, महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत*।

विश्व के लिए एक वैकल्पिक विकास मॉडल प्रस्तुत करती है, जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ मानवीय मूल्यों, सामाजिक न्याय और पर्यावरण संतुलन को बनाए रखने की दिशा में कार्य किया जाता है।

साहित्य की समीक्षा

उपाध्याय (2019) पंडित दीनदयाल उपाध्याय चाहते थे कि भारतीय मूल्यों (भारतीय मूल्य) को समाज में समाहित किया जाए और लोगों के व्यवहार में लाया जाए। उनके अनुसार, हिंदू ज्ञान पर आधारित एकात्म मानववाद ही विभिन्न संघर्षों और समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकता है। उन्होंने कहा कि मनुष्य प्रकृति का एक अभिन्न हिस्सा है और वह अपने जीवन के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर करता है। मनुष्यों के आपसी व्यवहार और प्रकृति के साथ उनके क्रिया-प्रतिक्रिया संबंध को एकात्म मानववाद के रूप में देखा जाता है। पश्चिमी देशों ने एक ऐसी आर्थिक प्रणाली का निर्माण किया है, जो केवल संवैधानिक तरीकों से संचालित होती है और अक्सर प्रकृति के नियमों के विरुद्ध जाती है। इस कारण, ये प्रणालियाँ समस्याओं और आपदाओं को आमंत्रित करती हैं। पंडित उपाध्याय ने यह तर्क दिया कि इन समस्याओं को केवल एकात्म मानववाद के सिद्धांतों के माध्यम से ही हल किया जा सकता है।

उन्होंने यह भी कहा कि विकासशील देशों को औद्योगिकीकरण को तुरंत अपनाने के बजाय कृषि को प्राथमिकता देनी चाहिए। उनके अनुसार, आर्थिक समस्याओं का समाधान कृषि के माध्यम से किया जा सकता है, क्योंकि औद्योगिकीकरण को प्राथमिकता देने से गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। यदि कोई देश लगातार और प्रभावी ढंग से कृषि के क्षेत्र में योजना बनाए और यदि प्रकृति भी अनुकूल हो, तो खाद्यान्न के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सकती है, और यह अत्यंत आवश्यक है।

पंडित उपाध्याय ने यह भी चेताया कि यदि कृषि की उपेक्षा की जाती है और केवल उद्योगों को बढ़ावा दिया जाता है, तो यह समाज और अर्थव्यवस्था के लिए विनाशकारी साबित हो सकता है। इसलिए, वह विकेंद्रीकरण के समर्थक थे, जहाँ विकास के केंद्र केवल शहर न हों, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों और कृषि को भी समुचित महत्व दिया जाए।

यह शोधपत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचारों का विश्लेषण करता है और यह बताने का प्रयास करता है कि उनके सिद्धांत आज के समय में भी कितने प्रासंगिक हैं। उनके आर्थिक विचार न केवल भारत की वर्तमान आर्थिक समस्याओं का समाधान प्रदान करते हैं, बल्कि एक संतुलित, नैतिक, और स्थायी आर्थिक व्यवस्था का मार्ग भी दिखाते हैं।

वेजेंदला (2018) पिछले तीन दशकों में भारत में पर्यावरणीय इतिहास एक रोमांचक और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अध्ययन के रूप में उभरा है। यह मुख्य रूप से मानव और प्रकृति के बीच के अतीत के संबंधों पर केंद्रित है। बौद्धिक पर्यावरणीय इतिहास उन विचारों को दस्तावेज़ करता है जो पर्यावरणीय दृष्टिकोण से विभिन्न बौद्धिकों द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं। इसी संदर्भ में, यह शोध पत्र पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों को एक पर्यावरणीय दृष्टिकोण से समझने और प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का दार्शनिक दृष्टिकोण मानव और प्रकृति के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संबंध की अद्भुत व्याख्या करता है। उनके विचारों में इस बात की झलक मिलती है कि भारतीय संस्कृति और प्राकृतिक स्वरूपों के बीच एक गहरा आध्यात्मिक संबंध है। उन्होंने प्रकृति को केवल संसाधन के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे संस्कृति, सभ्यता और मानव जीवन का अभिन्न हिस्सा माना।

उनके लेखन में इस बात को रेखांकित किया गया है कि भारतीय संस्कृति का मुख्य उद्देश्य प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना है। उन्होंने मानवीय जीवन को प्रकृति के साथ संतुलन में रखने की आवश्यकता पर बल दिया। उनके विचार केवल दार्शनिक दृष्टि तक सीमित नहीं थे, बल्कि यह मानवता के लिए एक व्यवहारिक मार्गदर्शन भी प्रदान करते हैं।

यह शोध पत्र इस बात का प्रस्ताव रखता है कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय के पर्यावरणीय दृष्टिकोण को दस्तावेज़ के रूप में संकलित करना और उसका अध्ययन करना आज के संदर्भ में अत्यंत उपयोगी है। विशेष रूप से, जब वर्तमान समय में उपाध्याय को एक मौलिक राष्ट्रवादी विचारक के रूप में व्यापक मान्यता प्राप्त हो रही है। उनके पर्यावरणीय विचार न केवल भारतीय संस्कृति के संरक्षण और प्रकृति के प्रति सम्मान की भावना को उजागर करते हैं, बल्कि वे समकालीन भारत की पर्यावरणीय चुनौतियों के समाधान के लिए भी एक मार्गदर्शन प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार, पंडित उपाध्याय के पर्यावरणीय आयामों का अध्ययन करना और उनके विचारों को आधुनिक संदर्भ में समझना, भारत के पर्यावरणीय इतिहास और समकालीन समस्याओं के समाधान के लिए एक महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। यह उनके विचारों की प्रासंगिकता को और अधिक गहराई से समझने का अवसर प्रदान करता है।

सुबरमणियन (2018) परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। इस संसार में यदि कोई चीज़ स्थायी है, तो वह स्वयं परिवर्तन है। मानव सभ्यता के आरंभ से ही, यह अनगिनत परिवर्तनों, विशाल विकासों और प्रतिप्रतिक्रियात्मक विकासों के दौर से गुजरी है। ये परिवर्तन केवल इसलिए संभव हो सके क्योंकि कुछ अज्ञात और अनाम व्यक्तित्वों ने अपनी मेहनत, समर्पण, और श्रम के बल पर मानवता के लिए सुख-सुविधा और स्वतंत्रता के नए आयाम गढ़े। परिवर्तन का यह नियम हमें सिखाता है कि स्थिरता केवल भ्रम है, और निरंतर प्रगति ही जीवन का आधार है। मानव सभ्यता का इतिहास इसका साक्षी है कि हर बड़ी खोज

और आविष्कार के पीछे ऐसे व्यक्तित्वों का हाथ है, जिन्होंने अपनी पहचान की परवाह किए बिना समाज के लिए नए रास्ते खोले। इन अनजान नायकों ने अपनी मेहनत और समर्पण के बल पर न केवल भौतिक विकास किया, बल्कि उन्होंने मानव जीवन को अधिक आरामदायक और सार्थक बनाने में योगदान दिया।

चाहे वह आग का आविष्कार हो, पहिये का निर्माण हो, या आधुनिक तकनीकी क्रांतियाँ हों, इन सभी ने मानवता को एक नई दिशा दी। लेकिन इसके पीछे छिपे उन अज्ञात और अनाम व्यक्तियों के त्याग और परिश्रम को भुलाया नहीं जा सकता, जिन्होंने अपने जीवन को दूसरों की बेहतरी के लिए समर्पित किया। ये लोग मानते थे कि परिवर्तन एक ऐसा साधन है, जो न केवल भौतिक सुख-सुविधा लाता है, बल्कि मानवता की स्वतंत्रता और उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त करता है। इस प्रकार, परिवर्तन का नियम हमें यह समझने की प्रेरणा देता है कि हर छोटा या बड़ा परिवर्तन समाज और मानवता की प्रगति के लिए आवश्यक है। अज्ञात नायकों की मेहनत और समर्पण ने मानव सभ्यता को उस ऊंचाई तक पहुंचाया है, जहां हम आज हैं। यह हमें सिखाता है कि हमें भी अपनी ऊर्जा और प्रयास समाज और मानवता की बेहतरी के लिए लगाना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इन परिवर्तनों के लाभों का अनुभव कर सकें।

नैन (2018) पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानववाद 1960 के दशक की शुरुआत में प्रस्तुत एक दार्शनिक विचारधारा है, जिसे भारतीय जनसंघ के नेता द्वारा विकसित किया गया था। एकात्म मानववाद की वैचारिक रूपरेखा प्राचीन भारतीय परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से प्रेरित है। इस विचारधारा के दार्शनिक आधार भारतीय समाज और धर्म (नैतिकता और कर्तव्य) की मूलभूत नींव पर निर्मित हुए हैं।

पंडित उपाध्याय ने पूंजीवाद और साम्यवाद जैसे सामाजिक और राजनीतिक दर्शन को सारगर्भित रूप से चुनौती दी और उनकी आलोचना की। उन्होंने यह तर्क दिया कि इन दोनों प्रणालियों में मानवीय जीवन के मानवीय पहलुओं के प्रति उपेक्षा और केवल आर्थिक पक्ष पर अत्यधिक बल देने की समस्या निहित है। इन विचारधाराओं की सीमाओं को उजागर करते हुए, एकात्म मानववाद ने मानव जीवन के भौतिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक पहलुओं के सामंजस्य की आवश्यकता पर जोर दिया।

एकात्म मानववाद का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति और समाज के बीच, और व्यापक स्तर पर, सृष्टि और परमात्मा के बीच तालमेल स्थापित करना है। उपाध्याय जी के अनुसार, प्रत्येक राष्ट्र की अपनी एक सांस्कृतिक और सामाजिक केंद्रीय अवधारणा होती है, जिसे उन्होंने 'चिति' कहा है। यह चिति किसी भी समाज की पहचान और उसकी मौलिक विचारधारा का प्रतिबिंब होती है। साथ ही, प्रत्येक समाज की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं, जिन्हें उन्होंने 'विराट' कहा है।

एकात्म मानववाद यह मानता है कि हर व्यक्ति के जीवन में कई भूमिकाएँ और आयाम होते हैं, और इन विभिन्न पहलुओं को एकीकृत करना ही इस विचारधारा का मुख्य उद्देश्य है। यह दर्शन मानव जीवन के अलग-अलग पक्षों – भौतिक, मानसिक, और आध्यात्मिक – को एक समग्र दृष्टिकोण में एकजुट करने का प्रयास करता है।

इस शोध पत्र के माध्यम से हम एकात्म मानववाद की बिखरी हुई वैचारिक विशेषताओं को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने का प्रयास करेंगे। इसके साथ ही, इस विचारधारा की समकालीन प्रासंगिकता का अध्ययन करेंगे, विशेषकर वर्तमान समय की राजनीतिक चुनौतियों का समाधान खोजने के व्यापक दृष्टिकोण से। इस विचारधारा के माध्यम से आज के राजनीतिक संकटों और सामाजिक असंतुलन का व्यावहारिक समाधान खोजा जा सकता है।

विश्लेषण

भारतीय संस्कृति की जड़ें समग्रता, सहअस्तित्व, और संतुलन पर आधारित रही हैं। यह संस्कृति न केवल आध्यात्मिक और नैतिक दृष्टिकोण से समृद्ध है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक विकास का भी एक सुसंगत मार्गदर्शन प्रस्तुत करती है। इसी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में एकात्म मानववाद का उदय हुआ, जिसे पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने एक समग्र सामाजिक और आर्थिक दर्शन के रूप में प्रतिपादित किया। यह सिद्धांत भारतीय संस्कृति के अखिल मानव कल्याण और संतुलित जीवन के मूलभूत सिद्धांतों को आधुनिक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था से जोड़ता है।

1. भारतीय संस्कृति और एकात्म मानववाद का परस्पर संबंध

(i) धर्म और नैतिक मूल्यों पर आधारित शासन प्रणाली

भारतीय संस्कृति में शासन को धर्म पर आधारित नीति के रूप में देखा गया है, जिसमें न्याय, सत्य, और लोक कल्याण को सर्वोपरि माना गया है। एकात्म मानववाद इस सिद्धांत को स्वीकार करता है और इसे आधुनिक शासन व्यवस्था में लागू करने की वकालत करता है।

- **धर्म का व्यापक अर्थ**: भारतीय संस्कृति में धर्म का अर्थ मात्र धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि कर्तव्य, नीति, और न्यायपूर्ण आचरण भी है।
- **शासन का उद्देश्य**: प्राचीन भारतीय ग्रंथों में राजधर्म का प्रमुख उद्देश्य प्रजा का कल्याण बताया गया है, जो एकात्म मानववाद के सिद्धांत से मेल खाता है।
- **आधुनिक संदर्भ**: भारत में आज भी सामाजिक नीतियों में नैतिकता, सेवा, और

सामाजिक कल्याण को प्राथमिकता दी जाती है, जैसे प्रधानमंत्री जन-धन योजना, डिजिटल इंडिया, और आत्मनिर्भर भारत अभियान।

(ii) सहअस्तित्व और सामाजिक समरसता
भारतीय संस्कृति की नींव वसुधैव कुटुंबकम् (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) की अवधारणा पर टिकी है। यह विचारधारा सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय के सिद्धांत को अपनाती है, जो एकात्म मानववाद के सामाजिक दृष्टिकोण से मेल खाता है।

- जाति, धर्म, और क्षेत्रवाद से ऊपर उठकर समाज की समरसता पर बल।
- गांधीवादी सर्वोदय और दीनदयाल उपाध्याय के अंत्योदय का सामंजस्य।
- आधुनिक संदर्भ: सामाजिक न्याय और समान अवसर प्रदान करने की दिशा में सरकार की विभिन्न योजनाएँ, जैसे सबका साथ, सबका विकास।

2. आर्थिक संरचना और आत्मनिर्भरता का सिद्धांत
(i) स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना
एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति की स्वदेशी और आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की धारणा को अपनाता है। यह सिद्धांत पश्चिमी पूंजीवाद और समाजवाद के चरमपंथी मॉडलों के बजाय एक विकेंद्रित, न्यायसंगत, और आत्मनिर्भर आर्थिक व्यवस्था को बढ़ावा देता है।

- गांधीजी के स्वदेशी आंदोलन की पुनर्परिभाषा।
- स्थानीय उद्योगों और कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देने की आवश्यकता।
- आधुनिक संदर्भ: 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया', और 'वोकल फॉर लोकल' अभियान।

(ii) विकेंद्रित आर्थिक मॉडल और ग्राम स्वराज
भारतीय संस्कृति में आर्थिक प्रणाली का आधार ग्राम आधारित अर्थव्यवस्था रहा है, जिसमें उत्पादन और उपभोग का संतुलन बना रहता था।

- एकात्म मानववाद ग्राम विकास को प्राथमिकता देता है।
- गांधी के ग्राम स्वराज और विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से प्रेरणा।
- आधुनिक संदर्भ: ग्रामीण विकास की नीतियाँ, जैसे MGNREGA, डिजिटल ग्राम, और ग्रामीण कौशल विकास योजनाएँ।

3. भारतीय सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और एकात्म मानववाद
(i) सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का सिद्धांत
भारतीय संस्कृति हमेशा से सांस्कृतिक विविधता में एकता का प्रतीक रही है। एकात्म मानववाद इस विचारधारा को अपनाते हुए राष्ट्रीयता की भावना को मजबूत करने पर बल देता है।

- भारत की विविधता में एकता को बनाए रखना।
- सांस्कृतिक पहचान और भारतीय परंपराओं का संरक्षण।
- **आधुनिक संदर्भ**: योग, आयुर्वेद, भारतीय भाषाओं और परंपराओं को पुनर्जीवित करने की सरकारी पहल।

4. तुलनात्मक विश्लेषण: भारतीय संस्कृति और एकात्म मानववाद

विषय	भारतीय संस्कृति	एकात्म मानववाद
धर्म और शासन	नैतिक शासन और राजधर्म	नीति-निर्माण में नैतिकता का समावेश
सामाजिक समरसता	वसुधैव कुटुंबकम्	सहअस्तित्व और सर्वजन हिताय
आर्थिक व्यवस्था	स्वदेशी और आत्मनिर्भरता	विकेंद्रित आर्थिक मॉडल
ग्राम आधारित विकास	ग्राम स्वराज	कुटीर उद्योग और स्थानीय उत्पादन
राष्ट्रीयता	सांस्कृतिक विविधता में एकता	सांस्कृतिक राष्ट्रवाद

5. समकालीन चुनौतियाँ और समाधान
(i) वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद

- **चुनौती**: वैश्वीकरण और उपभोक्तावाद भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को प्रभावित कर रहे हैं।
- **समाधान**: एकात्म मानववाद के अनुसार, भारत को स्वदेशी उत्पादन और आत्मनिर्भरता पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

(ii) आर्थिक असमानता

- **चुनौती**: पूंजीवादी मॉडल के कारण समाज में आर्थिक असमानता बढ़ रही है।
- **समाधान**: एकात्म मानववाद का विकेंद्रित आर्थिक मॉडल असमानता को कम कर सकता है।

(iii) नैतिक मूल्यों का क्षरण

- **चुनौती**: आधुनिक युग में नैतिकता और पारंपरिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है।
- **समाधान**: शिक्षा और नीति-निर्माण में नैतिकता को समाहित करना।

6. भविष्य के लिए संभावित नीतिगत सुझाव

- स्थानीय उद्योगों और स्वदेशी तकनीकों को बढ़ावा देना।
- सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए शिक्षा प्रणाली को भारतीय मूल्यों के अनुसार विकसित करना।

- ग्राम स्वराज और आत्मनिर्भर भारत की नीतियों का क्रियान्वयन।
- सतत विकास के मॉडल अपनाना और पर्यावरण-संरक्षण पर जोर देना।

भारतीय संस्कृति और एकात्म मानववाद एक-दूसरे के पूरक हैं। यह विचारधारा भारतीय मूल्यों को आधुनिक प्रशासनिक, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था से जोड़ती है। यदि इसे समकालीन वैश्विक परिप्रेक्ष्य में लागू किया जाए, तो यह न केवल भारत के लिए बल्कि विश्व के लिए भी एक संतुलित और न्यायसंगत विकास मॉडल प्रदान कर सकता है।

उपसंहार

भारतीय संस्कृति में एकात्म मानववाद की जड़ें गहरी और व्यापक रूप से स्थापित हैं। यह विचारधारा भारतीय परंपराओं, नैतिक मूल्यों और सामाजिक समरसता पर आधारित एक संतुलित विकास मॉडल प्रस्तुत करती है, जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और संपूर्ण विश्व के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर बल देता है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धांत, न तो पूर्ण रूप से पूंजीवाद की ओर झुकता है और न ही समाजवाद की अतिवादी प्रवृत्तियों को अपनाता है, बल्कि भारतीय संस्कृति के अनुरूप एक स्वदेशी, आत्मनिर्भर और न्यायसंगत प्रणाली को प्रोत्साहित करता है।

आज के वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और आर्थिक असमानता के दौर में, एकात्म मानववाद की उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। इस दर्शन के आत्मनिर्भर भारत, ग्राम स्वराज, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, सामाजिक समरसता और सतत विकास जैसे सिद्धांत आज भी भारतीय नीतियों और योजनाओं में परिलक्षित होते हैं।

- **आर्थिक दृष्टि से**, यह स्वदेशी उद्योगों, लघु एवं मध्यम उद्यमों और विकेंद्रित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने की वकालत करता है।
- **सामाजिक दृष्टि से**, यह सभी वर्गों के समावेशी विकास और सहअस्तित्व पर बल देता है।
- **राजनीतिक दृष्टि से**, यह नैतिक शासन और सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को सुदृढ़ करता है।

हालांकि, वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, और नैतिक मूल्यों के क्षरण जैसी चुनौतियाँ इस दर्शन के व्यापक क्रियान्वयन में बाधा उत्पन्न कर सकती हैं। इनसे निपटने के लिए स्वदेशी उत्पादन को पुनर्जीवित करना, सतत विकास नीतियाँ लागू करना, और भारतीय मूल्यों पर आधारित शिक्षा प्रणाली को बढ़ावा देना आवश्यक है। एकात्म मानववाद भारतीय संस्कृति का एक अद्वितीय दर्शन है, जो सामाजिक समरसता, आर्थिक आत्मनिर्भरता और नैतिक प्रशासन को एक साथ जोड़ता है। यह विचारधारा न केवल भारत बल्कि संपूर्ण विश्व को एक संतुलित और न्यायसंगत विकास मॉडल प्रदान कर सकती है। यदि इसे समकालीन संदर्भ में लागू किया जाए, तो यह समाज के हर वर्ग के उत्थान, पर्यावरण-संरक्षण, और सांस्कृतिक पुनर्जागरण में सहायक सिद्ध हो सकता है। अतः, एकात्म मानववाद केवल एक सिद्धांत नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की गहराई से निकला एक जीवन-दर्शन है, जो व्यक्ति और समाज के संपूर्ण विकास की दिशा में एक ठोस मार्गदर्शन प्रदान करता है।

हितों का टकराव

लेखक घोषणा करते हैं कि कोई महत्वपूर्ण प्रतिस्पर्धी वित्तीय, पेशेवर या व्यक्तिगत हित नहीं हैं जो इस पांडुलिपि में वर्णित कार्य के प्रदर्शन या प्रस्तुति को प्रभावित कर सकते हैं।

संदर्भ

1. वेजेंदला, रविकुमार (2018)। भारत का बौद्धिक पर्यावरणीय इतिहास: दीनदयाल उपाध्याय के विचारों पर एक अध्ययन। 2454-9827।
2. सुबरमणियन, सी (2018)। दीनदयाल उपाध्याय: नए भारत के परिवर्तन की परिकल्पना। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च रिव्यू, खंड 1, पृष्ठ 5-7।
3. शर्मा, गगन; सिंह, संजीत; एवं बावा, डॉ (2016)। एकात्म मानववाद पर समीक्षात्मक शोध पत्र: दीनदयाल उपाध्याय और उनके समकालीनों की तुलना। एशियन अकादमिक रिसर्च जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी, खंड 5।
4. वर्मा, राजेश और श्रीवास्तव, विजय (2022)। दीनदयाल उपाध्याय की आर्थिक दृष्टि की प्रासंगिकता: गांधीवादी ढाँचे में एक विश्लेषण। भारतीय लोक प्रशासन पत्रिका: भारतीय लोक प्रशासन संस्थान की त्रैमासिक पत्रिका, खंड 28, पृष्ठ 138-145।
5. उपाध्याय, मंजुला (2019)। दीनदयाल उपाध्याय के आर्थिक विचार। 2454-1826।